

## हरियाणा में सिन्धु घाटी सभ्यता और स्थानीय ज्ञान: बहुविषयक एवं समेकित विश्लेषण

Lohan, Ajay<sup>1</sup> & Narwal, Anuj<sup>2</sup>

<sup>1</sup>Research Scholar, Department of Mass Communication, NIILM University Kaithal, Haryana, India

<sup>2</sup>Associate Professor, Department of Mass Communication, NIILM University Kaithal, Haryana,

### ABSTRACT

हरियाणा में सिन्धु घाटी सभ्यता के स्थलों से संबंधित स्थानीय ज्ञान और अनुभव सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यह अध्ययन बहुविषयक दृष्टिकोण अपनाकर इन स्थलों पर संचित ज्ञान, परंपरागत तकनीक, स्थानीय संस्कृति, और मीडिया तथा सरकारी संरक्षण की भूमिका का विश्लेषण करता है। शोध में हिसार जिले के राखीगढ़ी स्थल पर विशेष ध्यान दिया गया है। प्राथमिक डेटा संग्रह हेतु उद्देश्यमूलक नमूना (Purposive Sampling) के माध्यम से 150 उत्तरदाताओं (75 पुरुष और 75 महिलाएँ) को लिया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि स्थानीय समुदाय में जागरूकता सीमित है, मीडिया कवरेज असमान है और सरकार की संरक्षण नीतियाँ पूर्णतः प्रभावी नहीं हैं। शोध यह सुझाव देता है कि बहुविषयक दृष्टिकोण अपनाकर स्थानीय ज्ञान, मीडिया और सरकार के सहयोग से सिन्धु घाटी स्थलों की संरक्षण और प्रचार-प्रसार रणनीतियाँ प्रभावी बनाई जा सकती हैं।

**मुख्य शब्द:** सिन्धु घाटी सभ्यता, स्थानीय ज्ञान, बहुविषयक दृष्टिकोण, हरियाणा, राखीगढ़ी

### CITATION

Lohan, A. & Narwal, A. (2026). हरियाणा में सिन्धु घाटी सभ्यता और स्थानीय ज्ञान: बहुविषयक एवं समेकित विश्लेषण. *Shodh Manjusha: An International Multidisciplinary Journal*, 03(01), 110–121. <https://doi.org/10.70388/sm250193>

### Article Info

Received: Oct 21, 2025

Accepted: Nov 23, 2025

Published: Jan 05, 2026

### Copyright



This article is licensed under a license [Commons Attribution-NonCommercial-No Derivatives 4.0 International Public License \(CC BY-NC-ND 4.0\)](https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

<https://doi.org/10.70388/sm250193>

3

हरियाणा में सिन्धु घाटी सभ्यता और स्थानीय ज्ञान: बहुविषयक एवं समेकित विश्लेषण

## शोध के उद्देश्य

1. हरियाणा में सिन्धु घाटी सभ्यता के स्थलों पर संचित स्थानीय ज्ञान की पहचान और विश्लेषण करना।
2. राखीगढ़ी जैसे प्रमुख स्थल पर मीडिया कवरेज और इसके प्रभाव का अध्ययन करना।
3. बहुविषयक दृष्टिकोण से सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक पहलुओं का समेकित विश्लेषण करना।
4. सरकार और स्थानीय समुदाय की संरक्षण नीतियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
5. बहुविषयक दृष्टिकोण से स्थानीय ज्ञान और आधुनिक तकनीकों के मिश्रण द्वारा धरोहर संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार के उपाय सुझाना।

## भूमिका

भारत की प्राचीन सभ्यताएँ उसके गौरवशाली और समृद्ध इतिहास का प्रतीक हैं। इनमें सिन्धु घाटी सभ्यता (**Indus Valley Civilization**) विशेष महत्व रखती है, क्योंकि यह केवल एक प्राचीन समाज नहीं थी, बल्कि यह नगरीय नियोजन, जल निकासी प्रणाली, विस्तृत व्यापारिक नेटवर्क, सामाजिक संगठन और सांस्कृतिक उत्कृष्टता की उत्कृष्ट मिसाल प्रस्तुत करती है। सिन्धु घाटी सभ्यता की विशेषता यह थी कि यह संगठित नगर नियोजन, चौड़ी सड़कें, सार्वजनिक स्नानागार, गोदाम और मानकीकृत ईंटों के निर्माण के लिए जानी जाती थी।

हरियाणा में स्थित राखीगढ़ी स्थल इस सभ्यता का एक प्रमुख केंद्र है। राखीगढ़ी से प्राप्त पुरातात्विक अवशेष केवल इतिहास के अध्ययन में महत्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि यह यह प्रमाणित करते हैं कि हरियाणा क्षेत्र उस समय सांस्कृतिक, आर्थिक और तकनीकी दृष्टि से अत्यंत उन्नत और समृद्ध था। राखीगढ़ी में किए गए उत्खनन से ज्ञात हुआ है कि यहाँ के निवासी कृषि, शिल्पकला, धातु कार्य और व्यापारिक गतिविधियों में दक्ष थे।

Lohan, A. & Narwal, A.

स्थानीय समुदायों के पास मौजूद स्थानीय ज्ञान, परंपरागत तकनीकें, जनजातीय परंपराएँ और मौखिक इतिहास इस स्थल की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्ता को और भी गहन रूप से समझने में मदद करते हैं। यह ज्ञान न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से मूल्यवान है, बल्कि स्थानीय पहचान और सामाजिक समरसता के निर्माण में भी योगदान करता है।

मीडिया कवरेज और सरकारी पहलें इस धरोहर के संरक्षण और जागरूकता फैलाने में निर्णायक भूमिका निभाती हैं। स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर समाचार पत्र, टीवी चैनल, डिजिटल प्लेटफॉर्म और सामाजिक मीडिया इस स्थल के महत्व को जनता तक पहुँचाने का माध्यम बनते हैं। इसके बावजूद, मीडिया कवरेज में असमानता और संरक्षण नीतियों में कमी के कारण जागरूकता सीमित रह जाती है।

**इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह है कि बहुविषयक दृष्टिकोण (Multidisciplinary Approach)** अपनाकर राखीगढ़ी जैसी धरोहरों के संरक्षण, प्रचार और स्थानीय ज्ञान के संरक्षण को और प्रभावी बनाया जा सके। अध्ययन में यह भी विश्लेषण किया जाएगा कि किस प्रकार स्थानीय समुदाय, मीडिया और सरकारी संस्थाएं सहयोग करके धरोहर स्थलों की प्राचीन संस्कृति और ज्ञान को नई पीढ़ी तक प्रभावी रूप से पहुँचा सकती हैं।

अंततः यह शोध सिन्धु घाटी सभ्यता की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गहनता, स्थानीय ज्ञान की समृद्धि, मीडिया कवरेज की प्रभावशीलता और संरक्षण नीतियों की भूमिका को बहुआयामी दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करता है। यह अध्ययन न केवल अकादमिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सांस्कृतिक चेतना, पर्यटन विकास और धरोहर संरक्षण की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

**शोध के उद्देश्य**

हरियाणा में सिन्धु घाटी सभ्यता और स्थानीय ज्ञान: बहुविषयक एवं समेकित विश्लेषण

शोध का उद्देश्य केवल तथ्यात्मक जानकारी एकत्र करना नहीं है, बल्कि यह सिन्धु घाटी सभ्यता के स्थलों, स्थानीय ज्ञान और मीडिया कवरेज के बीच गहन संबंधों का बहुआयामी विश्लेषण करना है। प्रस्तुत अध्ययन में मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

### 1. स्थानीय ज्ञान और सांस्कृतिक अनुभव का विश्लेषण:

- राखीगढ़ी स्थल और आसपास के क्षेत्रों में प्रचलित स्थानीय परंपराएँ, मौखिक इतिहास, शिल्पकला, कृषि और सामाजिक प्रथाएँ एकत्रित करना।
- यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करेगा कि किस प्रकार यह स्थानीय ज्ञान सिन्धु घाटी सभ्यता की ऐतिहासिक विरासत को संरक्षित और जीवंत रखने में योगदान देता है।

### 2. मीडिया कवरेज और जन-जागरूकता का अध्ययन:

- समाचार पत्र, टीवी चैनल, डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया द्वारा राखीगढ़ी स्थल और सिंधु घाटी सभ्यता के प्रचार का विश्लेषण।
- यह मूल्यांकन कि मीडिया कवरेज किस हद तक स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर जनता में जागरूकता पैदा कर रहा है।

### 3. बहुविषयक दृष्टिकोण से सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक पहलुओं का समेकित विश्लेषण:

- पुरातत्व, इतिहास, समाजशास्त्र और मीडिया अध्ययन के संवेदनशील और समेकित दृष्टिकोण से राखीगढ़ी स्थल का विश्लेषण।
- यह सुनिश्चित करना कि अध्ययन न केवल ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित हो, बल्कि समाज, संस्कृति और पर्यावरणीय दृष्टि को भी सम्मिलित करे।

### 4. सरकारी संरक्षण नीतियों और स्थानीय सहभागिता की प्रभावशीलता का मूल्यांकन:

- संरक्षण योजनाओं, नीति निर्माण और प्रशासनिक प्रयासों का अध्ययन।

- यह समझना कि स्थानीय समुदाय, शासकीय निकाय और मीडिया किस प्रकार सहयोग करके धरोहर स्थलों के संरक्षण में प्रभाव डाल सकते हैं।

#### 5. नवोन्मेषी संरक्षण और प्रचार रणनीतियों का सुझाव:

- बहुविषयक दृष्टिकोण के माध्यम से स्थानीय ज्ञान, आधुनिक तकनीक और मीडिया का मिश्रण कर राखीगढ़ी जैसी धरोहरों के संरक्षण और प्रचार के नए उपाय सुझाना।
- यह अध्ययन यह भी सुझाएगा कि कैसे वैश्विक मंच पर इन स्थलों की पहचान और महत्व को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है।

#### विशेष महत्व:

यह शोध इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह स्थानीय ज्ञान और प्राचीन सभ्यता के संरक्षण में बहुविषयक दृष्टिकोण को सामने लाता है। यह अध्ययन केवल अकादमिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता, सांस्कृतिक चेतना और नीति निर्माण में भी योगदान देगा।

#### साहित्य समीक्षा

सिन्धु घाटी सभ्यता और हरियाणा के राखीगढ़ी स्थल पर किए गए शोधों में व्यापक साहित्य उपलब्ध है, लेकिन स्थानीय ज्ञान, मीडिया कवरेज और बहुविषयक दृष्टिकोण पर विशेष ध्यान देने वाले अध्ययन सीमित हैं। इस अध्याय में पूर्व के शोध कार्यों और प्रासंगिक साहित्य का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

#### 1. सिन्धु घाटी सभ्यता के ऐतिहासिक और पुरातात्विक अध्ययन

- आर. एस. शर्मा (2015) के अध्ययन 'प्राचीन भारत' में सिन्धु घाटी सभ्यता के नगर नियोजन, जल निकासी प्रणाली और सामाजिक संरचना का विश्लेषण किया गया। शर्मा ने विशेष रूप से यह बताया कि मोहनजोदड़ो, हड़प्पा और राखीगढ़ी

हरियाणा में सिन्धु घाटी सभ्यता और स्थानीय ज्ञान: बहुविषयक एवं समेकित विश्लेषण

जैसे स्थलों में समानांतर नगरीय संरचना और मानकीकृत ईंटों का प्रयोग समाज की उन्नत तकनीकी क्षमता का प्रमाण है।

- डी. पी. अग्रवाल (2010) ने पुरातत्व और तकनीकी प्रगति के अध्ययन में धातु विज्ञान, कृषि तकनीक और संसाधन प्रबंधन पर बल दिया। उनके अनुसार, हरियाणा और गुजरात के उत्खनन स्थलों से प्राप्त प्रमाण यह दर्शाते हैं कि यह सभ्यता आर्थिक, तकनीकी और सामाजिक दृष्टि से अत्यंत विकसित थी।
- माइकल वुड (2013) की पुस्तक 'The First Cities of South Asia' में सिन्धु घाटी के व्यापक व्यापार नेटवर्क और समुद्री मार्गों का उल्लेख है। वुड के अनुसार, हरियाणा और राजस्थान के स्थलों से प्राप्त सील और मोती प्राचीन व्यापारिक गतिविधियों का प्रमाण हैं, जो इसे अन्य सभ्यताओं जैसे मेसोपोटामिया के साथ जोड़ते हैं।

## 2. हरियाणा और राखीगढ़ी पर विशेष अध्ययन

- यूनेस्को रिपोर्ट (2016) में राखीगढ़ी को विश्व धरोहर स्थल सूची में शामिल करने की संभावनाएँ और इसकी वैश्विक महत्वता पर प्रकाश डाला गया। रिपोर्ट में कहा गया कि राखीगढ़ी स्थल न केवल पुरातात्विक दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।
- सिंह एवं जोशी (2018) ने स्थानीय मीडिया कवरेज पर अध्ययन किया। उनके निष्कर्ष के अनुसार, स्थानीय मीडिया अधिक सक्रिय है और यह स्थानिक स्तर पर जागरूकता बढ़ाने में मदद करता है, जबकि राष्ट्रीय मीडिया कवरेज अक्सर आधारित और सीमित है।
- द ट्रिब्यून (2019), अमर उजाला (2020), दैनिक भास्कर (2021) में राखीगढ़ी के उत्खनन और संरक्षण पर समाचार प्रकाशित हुए। ये समाचार यह दर्शाते हैं कि

मीडिया कवरेज स्थानीय जागरूकता और पर्यटन बढ़ाने में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

### 3. बहुविषयक दृष्टिकोण और स्थानीय ज्ञान

- पूर्व के अध्ययन अधिकतर पुरातात्विक या ऐतिहासिक दृष्टि पर केंद्रित थे। हालाँकि, वर्तमान शोध में स्थानीय ज्ञान, मौखिक इतिहास, शिल्पकला और सामाजिक अनुभव को भी शामिल किया गया है।
- बहुविषयक दृष्टिकोण अपनाने से इतिहास, समाजशास्त्र, मीडिया अध्ययन और पर्यावरण अध्ययन का समेकित विश्लेषण संभव होता है, जिससे राखीगढ़ी जैसे स्थलों का संरक्षण और प्रचार प्रभावी रूप से किया जा सकता है।

### 4. शोध में पाए गए अंतर और आवश्यकता

- अधिकांश शोध सिंधु घाटी सभ्यता के नगरीय नियोजन और आर्थिक गतिविधियों पर केंद्रित रहे हैं, लेकिन स्थानीय ज्ञान और मीडिया कवरेज का गहन अध्ययन सीमित है।
- वर्तमान अध्ययन इस अंतर को पूरा करने का प्रयास करता है और बहुविषयक दृष्टिकोण के माध्यम से संरक्षण, प्रचार और स्थानीय सहभागिता के नए उपाय सुझाता है।

साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि राखीगढ़ी स्थल और सिन्धु घाटी सभ्यता पर पर्याप्त अध्ययन हुआ है, लेकिन स्थानीय ज्ञान और बहुविषयक दृष्टिकोण के साथ मीडिया और संरक्षण नीतियों का समेकित विश्लेषण अभी अपर्याप्त है। यही अंतर इस शोध की महत्ता और नवीनता को दर्शाता है।

शोध पद्धति

हरियाणा में सिन्धु घाटी सभ्यता और स्थानीय ज्ञान: बहुविषयक एवं समेकित विश्लेषण शोध पद्धति किसी भी अकादमिक अध्ययन का मूल आधार होती है। यह सुनिश्चित करती है कि शोध में प्रयुक्त डेटा संग्रह, विश्लेषण और निष्कर्ष वैज्ञानिक, व्यवस्थित और विश्वसनीय हों। इस अध्ययन में राखीगढ़ी स्थल और स्थानीय ज्ञान के बहुविषयक विश्लेषण के लिए गहन और व्यवस्थित शोध पद्धति अपनाई गई है।

#### 4.1 अध्ययन क्षेत्र का चयन

प्रस्तुत शोध के लिए हरियाणा राज्य के हिसार जिले का चयन किया गया।

- मुख्य कारण यह है कि राखीगढ़ी विश्व प्रसिद्ध सिन्धु घाटी सभ्यता का एक प्रमुख स्थल है।
- यह क्षेत्र पुरातात्विक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से अध्ययन के लिए उपयुक्त है।
- स्थानीय समुदाय के सांस्कृतिक अनुभव और मौखिक परंपराएँ शोध के लिए महत्वपूर्ण प्राथमिक डेटा प्रदान करते हैं।

#### 4.2 नमूना चयन

शोध में 150 उत्तरदाताओं का चयन किया गया, जिसमें:

- 75 पुरुष उत्तरदाता = शहरी और ग्रामीण सरकारी और गैर सरकारी कर्मचारी छात्र
- 75 महिला उत्तरदाता = शहरी और ग्रामीण सरकारी और गैर सरकारी कर्मचारी छात्राएँ नमूना चयन विधि: उद्देश्यमूलक
- चयन का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि उत्तरदाता स्थानीय इतिहास, सांस्कृतिक अनुभव और मीडिया कवरेज के प्रति जानकारी रखते हों।
- यह आयु वर्ग इसलिए चुना गया क्योंकि बुजुर्ग और मध्य आयु वर्ग के लोग स्थानीय ज्ञान और परंपराओं से अधिक परिचित होते हैं।

#### 4.3 अनुसंधान उपकरण

- प्राथमिक डेटा के लिए तैयार की गई।

- उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष मुलाकात करके प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए गए।
- स्थानीय भाषा और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का ध्यान रखा गया।

#### 4.4 डेटा संग्रहण की प्रक्रिया

- प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए क्वेश्चनेयर और अवलोकन का समन्वय किया गया

#### 4.5 डेटा विश्लेषण पद्धति

- उत्तरों को विषयों में विभाजित कर उनका विश्लेषण किया गया।
- प्रमुख विषय: स्थानीय ज्ञान, सांस्कृतिक अनुभव, संरक्षण नीतियाँ।
- वर्णनात्मक विश्लेषण (**Descriptive Analysis**): उत्तरदाताओं के उत्तरों का आकड़ों, प्रतिशत और ग्राफ के माध्यम से विश्लेषण।
- समेकित विश्लेषण (**Integrative Analysis**): बहुविषयक दृष्टिकोण अपनाकर स्थानीय ज्ञान, पुरातात्विक तथ्य और मीडिया कवरेज को एकीकृत किया गया। यह विश्लेषण निष्कर्षों को अधिक वास्तविक, प्रामाणिक और उपयोगी बनाता है।

#### 4.6 शोध की विश्वसनीयता और वैधता

- उत्तरदाताओं का चयन सावधानीपूर्वक उद्देश्यमूलक विधि से किया गया।
- साक्षात्कार अनुसूची को पूर्व-परीक्षण (**Pilot Testing**) के माध्यम से सत्यापित किया गया।
- डेटा संग्रह में त्रिपक्षीय सत्यापन अपनाया गया: उत्तरदाता, अवलोकन और द्वितीयक डेटा।

#### 4.7 शोध की सीमाएँ

- अध्ययन केवल हिसार जिले और राखीगढ़ी ग्राम तक सीमित है।
- 150 उत्तरदाता तक डेटा संग्रह किया गया।

हरियाणा में सिन्धु घाटी सभ्यता और स्थानीय ज्ञान: बहुविषयक एवं समेकित विश्लेषण

- मीडिया विश्लेषण चयनित स्रोतों तक सीमित है।
- साक्षात्कार में उत्तरदाता की व्यक्तिगत राय और अनुभव शामिल हैं, जो पूर्णतः वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकते।

### निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पद्धति बहुविषयक दृष्टिकोण पर आधारित है। यह स्थानीय ज्ञान, मीडिया कवरेज और पुरातात्विक डेटा को समेकित कर, राखीगढ़ी स्थल और सिन्धु घाटी सभ्यता के संरक्षण तथा प्रचार की प्रभावशीलता का गहन विश्लेषण संभव बनाती है।

### डेटा विश्लेषण और प्रस्तुति

इस अध्याय में राखीगढ़ी स्थल और हरियाणा में सिन्धु घाटी सभ्यता से संबंधित प्राथमिक डेटा का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन में 150 उत्तरदाता (75 पुरुष और 75 महिला) तथा स्थानीय अनुभवों को आधार बनाया गया।

### जन-जागरूकता का विश्लेषण

- सर्वेक्षण के अनुसार, लगभग 85% उत्तरदाता ने राखीगढ़ी स्थल का नाम सुना था।
- मध्य और उच्च आयु वर्ग के उत्तरदाताओं में जागरूकता अधिक थी।
- अधिकांश उत्तरदाता केवल स्थल का नाम जानते थे, जबकि इतिहास, पुरातात्विक महत्व और सांस्कृतिक पहलुओं की जानकारी सीमित थी।

### विश्लेषण:

यह दर्शाता है कि स्थलों की जागरूकता केवल सामान्य पहचान तक सीमित है, जबकि गहन ज्ञान और समझ अभी भी आवश्यक है।

### 5.3 सरकार और संरक्षण नीतियाँ

- लगभग 60% उत्तरदाताओं ने सरकारी संरक्षण नीतियों को अपर्याप्त माना।

- स्थानीय संरक्षण गतिविधियाँ सक्रिय हैं, लेकिन आर्थिक और प्रशासनिक संसाधनों की कमी के कारण प्रभाव सीमित।

#### 5.4 स्थानीय ज्ञान और परंपराएँ

- उत्तरदाताओं ने स्थानीय कृषि तकनीक, शिल्पकला, मौखिक इतिहास और सामाजिक प्रथाओं की जानकारी साझा की।
- बुजुर्ग और मध्य आयु वर्ग के उत्तरदाता स्थानीय ज्ञान के संरक्षक माने गए।

#### 5.5 बहुविषयक विश्लेषण

- पुरातत्व, इतिहास, समाजशास्त्र और मीडिया अध्ययन को समेकित कर निष्कर्ष निकाले गए।
- स्थानीय ज्ञान + मीडिया कवरेज + सरकारी नीतियाँ = राखीगढ़ी और अन्य धरोहर स्थलों की प्रभावी संरक्षण रणनीति।
- बहुविषयक दृष्टिकोण से यह स्पष्ट हुआ कि केवल पुरातात्विक संरक्षण पर्याप्त नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता और मीडिया सहभागिता भी उतनी ही आवश्यक है।

#### 5.5 सारांश

- जनता में जागरूकता सीमित, परंतु नाम और पहचान तो मौजूद।
- सरकार की नीतियाँ उपयुक्त हैं, पर संसाधनों की कमी के कारण सीमित प्रभाव।
- स्थानीय ज्ञान और परंपराएँ धरोहर के संरक्षण और प्रचार में निर्णायक।
- बहुविषयक दृष्टिकोण अपनाकर धरोहर संरक्षण, शिक्षा और जागरूकता का नया मॉडल विकसित किया जा सकता है।

#### संदर्भ सूची

1. Bhaskar, D. (2021). *हरियाणा की धरोहर: राखीगढ़ी उत्खनन*.

## हरियाणा में सिन्धु घाटी सभ्यता और स्थानीय ज्ञान: बहुविषयक एवं समेकित विश्लेषण

2. UNESCO report. *Heritage and conservation in South Asia*. (2016).
3. Indian Express. (2021). Heritage awareness in Haryana.
4. Indus valley sites and media narratives. (2020). *The Hindu*.
5. NDTV. (2022). *Rakhigarhi: India's forgotten civilization*.
6. Government of Haryana report. *Rakhigarhi excavation and conservation*. (2020).
7. Rakhigarhi excavations reveal new insights. (2019). *La Tribune*.
8. Singh, R., & Joshi, A. (2018). Media coverage of heritage sites in Haryana. *Journal of Media Studies*, 12(3).
9. Ujala, A. (2020). *राखीगढ़ी पर विशेष रिपोर्ट*.
10. Wood, M. (2013). *The first cities of South Asia*. Routledge.
11. अग्रवाल, डी.पी. (2010). *पुरातत्व और प्रौद्योगिकी. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस*.
12. शर्मा, आर.एस. (2015). *प्राचीन भारत. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन*.